



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक अखबार	18.01.23	३	३-६

कामयाबी • अंतरराष्ट्रीय संस्था ने बीमारी पर शोध रिपोर्ट को मान्यता दी, वीसी ने सराहा

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोज ज्वार का नया रोग और इसका कारक

भास्कर नूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेवर्सिला वैरिकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशनात्मक वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द आनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्वीत को खोजने की कोशिश करेंगे। विश्वविद्यालय के वृत्तान्ति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि अदलती कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खातरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द इस दिशा में भी कामयाच होंगे।



एचएयू वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोफैलोजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोफैलोजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुणे अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेवर्सिला लीफ स्ट्रिक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करती हुई अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्पत्ता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यातः हिसार, रोहतक व महेन्द्रनगर में यह बीमारी देखने को मिलती है। पात्ता रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द फैलाने से योजनावाले फैलाने का मिलता है। यह रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी के कारक फैलाने से योजनावाले फैलाने का मिलता है। डॉ. मर्लिक ने कहा कि कई स्थानों, जैव रसायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के अधार पर हम यह साक्षित करने में कामयाच हैं कि एक जीवाणु क्लेवर्सिला वैरिकोला इस बीमारी का कारक है। एचएयू के वैज्ञानिक डॉ. मनवीत घण्घर, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पर्मी कुमारी, डॉ. बजरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. वर्षभिंद पाल मिश्र, डॉ. मर्लिक आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सरी	18-01-23	३	५-८

एच.ए.यू. वैज्ञानिकों ने खोजी ज्वार की नई बीमारी

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल ने दिखाई दिए थे लक्षण

अमेरिकन फाइटोफैलोजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को नाम्यता

हिसार, 17 जनवरी (गढ़ी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरिकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्त्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ज्वार की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ। इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं।

डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबसिएला वैरिकोला इस बीमारी का कारक है। यह रोग पत्तियों पर छोटी से लेकर लंबी लाल-भूरे रंग की धारियों के रूप में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों की संख्या में वृद्धि होती है जो बाद में नैक्रोटिक क्षेत्र में परिवर्तित हो जाते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिवृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की

समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
‘अभू’ उत्ताला	18-01-23	2	६४

एचएयू के वैज्ञानिकों ने खोजी ज्वार की नई बीमारी अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी ने दी बीमारी को मान्यता

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है।

पीछे में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल एलाइट बीमारी में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। एचएयू के कुलपति डॉ. बीआर कांबोज ने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा।

इस रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढीगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिनियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।



एचएयू के वैज्ञानिकों को ज्वार की फसल की नई बीमारी खोजने पर सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संकल

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के एलाइट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक डिजीज औफ सोरगम' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत धरणवस, डॉ. पूजा मांगवान, डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. बनरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलविंदर पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने शोध कार्य में योगदान दिया।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण : अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया।

4 साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने

इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेंद्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनावधु प्रज्ञन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत सभाभाषण	१४-०१-२३	५	३-५

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

अमेरिकन फाइटोपेथोलॉजिकल सोसायटी ने दी बीमारी को मान्यता

हिसार, 17 जनवरी (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरिकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशनुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्त्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे अंतर्राष्ट्रीय संस्था ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपेथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस), यू.एस.ए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपेथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषक तौर पर विभिन्न पौधों की बिमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। बीमारी के बाद इसके प्रसार की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाइ दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के अगे प्रसार पर कही निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को योग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सन्धि छेद	१४.०१.२३	३	५-४

अमेरिकन फाइटोप्थोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

एचएएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी



इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोषकों और विश्वविद्यालय के प्लाट फैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोप्थोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दोशन छलेक्सिएटा लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोर्गम पर शोष रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोषकर्ता माने गए हैं। डॉ. मलिक ने कहा कि कई स्पष्टतम्भक, जैव रासायनिक, आणिक और रोगजनकता परीक्षणों के अधार पर हम यह सांकेतिक रूप से एक जीवाणु क्लोबसिएटा वैरिकोला इस बीमारी का कारक है।

वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों रिपोर्ट को प्रथम शोष रिपोर्ट के रूप में से एक है जो विशेषतः पौधों की विभागिता पर विश्वस्तरीय प्रकाशन में दर्शाया गया है। अमेरिकन फाइटोप्थोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस) द्वारा प्रकाशित सोसाइटी (एपी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे

निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य: कंघोज

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. कंघोज ने कहा कि बदलते कृषि परिवर्षमें विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने की कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियन्त्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओपसडी डॉ. अतुल दीमड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा व मीडिया एडवाइजर डॉ. सदीप आर्य भी मौजूद थे।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण
अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। वार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज ली है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने का मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एचएस महाराण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

को खोज करने वाले सबसे पहले अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार मान्यता प्रदान करते हुए अपने में क्लोबसिएटा लीफ स्ट्रीक बीमारी जनल में प्रकाशन के लिए स्वीकृत पर शोष रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे किया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
यैनि २५ जुलाई	१४.०१.२३	७	३-४

हकूमि के वैज्ञानिकों ने खोजी ज्वार की नयी बीमारी, अमेरिका ने दी मान्यता

दिनांक: १७ जून २०१८ (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नयी बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला की खोज की है। वैश्वक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द अनुबंधित स्तर पर प्रतिरोध स्थेत को खोजने की कार्रवाई करेगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

पौधों में नयी बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपथोलॉजिकल सोसाइटी (एफीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिनिधि जर्नल प्लाट हिंडोज में वैज्ञानिकों की इस नयी बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपथोलॉजिकल सोसाइटी (एफीएस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे

2018 नें दिखे थे लक्षण

अनुसधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार 2018 में ज्वार में नयी तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने काम किया। 4 साल की महानंत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एवरेस सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजलन कर्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है।

प्रसार पर रखें कड़ी निगरानी :

प्रो. काम्बोज कुलपति डॉ. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों की बधाई दी। उन्होंने कहा कि बदलते कृषि परिवृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
इंडिया न्यूज	18.01.2023	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

• with 25 others in 2019



अमेरिकन काइट्स एवं वैलेजिकाल शोरसाइटी ने दी बीमारी का महान प्रभाव । अमेरिकी

योग्यता वाला शिक्षण संस्थान के विभिन्न तरफ़ के विद्यार्थी ने ज्ञान की नई दीमती द दृष्टि का अवलोकन कीजिए इस पर वहाँ वार ज्ञान कारन में हुए नये की दीमती का एक सामान है। विभिन्न तरफ़ के कुलांगि ये बोध वाल कम्पनी के नियमों का उपयोग प्रयोगिकों ने इस गोपनीयता का अध्ययन कर रखा है वह सभी में आवश्यक है कि ज्ञान का विविधता का अवलोकन कर रखा है वह सभी में आवश्यक है कि

स्वीकार किया है। बोमरी के बाद इसके प्रतीक भी नियमानुसार व उपरित प्रबलग का ही तहस ग्रोटेसर भी, और, काम्बोज विषयवाचालग का कुलता जड़ी भी, और, काम्बोज न व्यूनिकी की इस खाल का लिए प्रभावी है। या, काम्बोज न कहा कि बालाते कुपी गोरखण में विभिन्न कालाते में उभरते छातरों की दम्पत यह व्यवहार महाव्यापी हो रहा है। उभान व्यूनिकों रो बीमारी के लाग द्वारा यह कही नियमानुसार रखने का बाहा। उभान के द्वारा कि व्यूनिकों का लाग नियमानुसार यह जल्द जाम लगाकर करना चाहिए। इस अवधार यह असाधार भी अदृष्ट दीर्घा, कुपी व्यवहारणात्मक के अधिकारी द्वारा यह की जानकारी न मिलनी आवश्यक नहीं रही।

जनप्रियता के दृष्टिकोण से नाराजगी एवं अवश्यकता का विवरण नहीं भर सकता। यह 2018 में ज्यादा की जाता है एवं इसका दृष्टिकोण वर्ष 2017 से बदलता है।

www.oxfordjournals.org

इन प्रायोगिकों का इस अमृत साधन
इन वीमारी के मुख्य उपचारों में प्रियोगिकाल के रूपात् प्रोटोकोल्स डॉ विनोद कुमार मिश्र ने कहा कि अतिरिक्त प्रयोगिक साधन अभियान काल्पनिक तरीकों के द्वारा दिया गया है। 2022 के दौरान ज्ञानशाला लीन एवं विनोद और शोध निवेदित को स्वीकार किया गया है। इनकाम का उपचारिकाल के उपायिक चूनियां द्वारा दी गई वीमारी के सबसे उत्तम उपचारात्मक माने गए हैं। डॉ. नीलकंठ ने कहा कि कहु जानावाहक, जेट लाइनिंग, अण्डायिक और रोगजनकता परीक्षण के आधार पर एम पाय रायित करने में कामयाद रहे हैं कि एक जीवाणु कालायिंग के द्वारा इस वीमारी का काटक है। एष दोनों परीक्षाएँ एवं तुलनीय से लेकर लंबे लाप्त-भूर रन की धारियों के लिए में प्रकट होती हैं। रायपक के राह पर, इन धारियों की संख्या में बढ़िया दर्दी है जो बाद में विभिन्न क्षेत्रों में प्रवर्तित हो जाते हैं। इन्हाँ के विभिन्नों डॉ. मनवीन चाहल, डॉ. गुरु राघवन, डॉ. अम्बी कुमारी, डॉ. बद्रिंग लाल शर्मा डॉ. विजित कमारी, डॉ. दत्तविजय पाठ विह, डॉ. सुरजकुमार जायी और डॉ. नवजीत अल्होड़न ने भी इस विषयकात्मक में विशेषज्ञ रहिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

संसाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एन्डुस्पॉन समाज	17.01.2023	-----	-----

| हिसार : एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

© 17 Jan 2023 18:01 UTC



अस्त्रियों का दूषित होने से जुड़ी विषयों पर विशेषज्ञता नहीं है।

हिमार, 17 जलवरी (दि. स.)। दृश्याता कृषि विधानसभा हिमार के दैत्यनिकों ने उपर की नड़ी भीमारी व इसके कारण जीवाणु लोबक्षिपता दैरीकोशा की प्राप्ति की है। वैधिक स्तर पर यहकी बार उपर प्रजाता में इस नदी की बीमारी का प्रभाव चाहा है। विधिक्षिताप्रय के कुलपति श. शोआर खानबांध के लिट्टलगुप्ताप दैत्यनिकों ने कुप्री रोग के प्रबोधन के कारण शुक्र अर टिका ह ए जलद अ. गांव आनुप्राप्तिक स्तर पर प्रतिरोध ज्ञात लो जान जो कोरिशा चर्चे। दैत्यनिकों जो उद्दीप्त हैं विष ए उपर ही उपर हिता है भी ज्ञानसाध ही।

पांची औं नक्के दीमारी को सामन्या है ताकि अंद्रेविकल लाइटोपीयोजिकल गोमद्वीपी (एपीएस), दूसरा द्वारा प्रस्तुतिष्ठित उत्तरवाहिक में दीजालिकों की हड्डी तक दीमारी की विधाएँ को प्रबन्ध शीघ्र विद्युत के काप में जलने के अविकार कर आवश्यकता दी है। अंद्रेविकल लाइटोपीयोजिकल सोसायटी (एपीएस) पांची की दीमारियों के अधिकारण के लिए सदस्य तुरंत अंद्रवाहिक दीजालिक मन्दिरों में से एक है जो विशेष दीची की दीमारियों पर विश्वस्त्रीय व्यक्तापाल रहती है। दीजालिक कृषि विधिविधायक के दीजालिक दुनिया में हड्डी दीमारी की ओज़ करने वाले सदस्य पहले दीजालिक हैं। इन दीजालिकों ने उत्तरवाहिक सोसायटीपाल विधि स्ट्रैक दीमारी पर शोध विद्युत व्यवस्था की है जिसे अंद्रवाहिक स्वतंत्र पर संसाधा से आवश्यक प्राप्ति करने द्वारा अपने जलने में व्यक्तापाल के लिए दूसीकार किया जाता है।

दिशानियत के कुलपति डॉ. शीराम कन्दोज ने ग्रामशार के वैज्ञानिकों की हड्डी योजा के लिए वधाई दी। डॉ. कन्दोज ने कहा कि बदलने लृप्ति परिषद्य में विभिन्न कमलों द्वारा उभरसे वस्त्रों की कलम्प पर पहचान महन्यपूर्ण हो जाए। उन्होंने वैज्ञानिकों से शीरामी के आगे चलार पर कहा कि विवाही रसायन की काहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को शीरा नियन्त्रण पर जन्म में जास्त आँख और उनका बढ़ाविंग। इस अवसर पर ओपरेटर डॉ. उमर दीणडा, वैज्ञानिकों से अपीलिंग की तरफ का यात्रा व नियन्त्रित करने के लिए आये थीं द्वितीय दी.

ਅਮੁੰਬਰਾਲ ਪਿਨਡੀਆਂ ਤੋਂ, ਜੀਵਾ ਗਸ ਬੱਡੀ ਨੇ ਦੱਤਾਵਾ ਕਿ ਪਹਲੀ ਬਾਰ, ਅਕਿਲ-2015 ਵੇਂ ਭਾਵਾ ਮੈਂ ਨਾਈ ਤਸਵੀਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਪਰ ਪੈਜਾਲਿੰਗ ਨੇ ਸਨਪਰਤਾ ਮੈਂ ਕਾਢ ਕਿਯਾ। ਚਾਰ ਸਾਲ ਵਿੱਚ ਇੱਥੇ ਤੋਂ ਬਾਹਾਂ ਪੈਜਾਲਿੰਗ ਨੇ ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਪ੍ਰਾਂਕ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਬਾਲੀਨ ਸਾਡੀ ਤੋਂ ਰਾਹੀਂ ਕੇ ਸੁਖਗਤ, ਕਿਸਾਨ, ਰੋਹਟਾਂ ਵਾਂ ਮੈਂਹਿਲਾਂਗ ਵੇਂ ਪਹਿ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਸਿੰਘੀ ਹੈ। ਪਾਛ ਗੋਂ ਪਿਨਡਾਂ ਨੇ ਅਧੀਨ ਕੀ ਪਾਛ ਏਸ. ਮਹਾਰਾਣ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਕੀਝਾਂ ਕੀ ਜਲਦ ਪਹਚਾਤ ਦੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਬਾਹੁੰਦ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਿਵੇਂ ਕਰਨੇ ਵਿੱਚ ਆਵਾਜ਼ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਹੈ।

इस शीर्षकी के मुख्य शोधकर्ता और विनायिकालय के प्लाट एमोलिजिस्ट डॉ पिलोट कुमार अग्रिम ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समाजल अधोरेखन इन्हटारियोसालिजिस्ट शोभाद्वारा, यूरोप में इन्सेप्ट 2022 के टीराम चलेगिएगा। जीव ट्रायोक डिजिटल और जलवायन पर शोध प्रोटोट जीवीकरण किया गया है। यथापन् के वैज्ञानिकों द्वारा मानवीय जलवायन की वृजता स्थानान्वयन, जो पर्यावरण कुमारी, जो जलवायन नाम दिया गया, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दिलपिंदर पाल चिंह द्वारा संचालित आयोग और डॉ. लक्ष्मीनाथ अहलावत ने भी इस शोधकार्य के योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम समस्त दौरभाषण	दिनांक 17.01.2023	पृष्ठ संख्या -----	कॉलम -----
-------------------------------------	----------------------	-----------------------	---------------

एचएपू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

समय हितियाणा न्यूज
हिमाचल। बीमारी घटने मिठ दृष्टियाण
 कृषि विधिविभाग के वैदानिकों ने
 ज्ञान की नई बीमारी व इसके करब
 विवाह लेनेवास्तु कैरिकोला की
 खोज ली है। वैदानिक सत्र पर यात्री घर
 ज्ञान कालान में इस तरह की बीमारी का
 पत चला है। विधिविभाग के कृषिपति
 प्रभा चौ. अर. कालान के विशेषज्ञ
 वैदानिकों ने इस रोग के प्रबलन के कारण
 गुर कर दिए हैं ग जान से जान
 आनुवासिक सत्र पर ड्रिफ्टोप्रस्तुति का
 लोकन की विवाह करने। वैदानिकों

सबसे पुराने लंदरार्थीय वैदानिक
 नंगलों में से एक है जो चिकित्सा वैदों
 की विधिविभाग पर विधिविभाग प्रकाशन
 करती है। दृष्टियाण कृषि विधिविभाग
 के वैदानिक दृष्टियाण में इस बीमारी की
 खोज करने वाले सबसे पाले वैदानिक हैं। इन वैदानिकों ने ज्ञान में
 लेनेवास्तु स्टोक स्टोक बीमारी पर
 गोपनीय रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे
 अंतर्राष्ट्रीय सत्र पर बोला ने यात्रा
 प्रदान करते हुए अपने जान से प्रकाशन
 के लिए स्वीकार किया है।

बीमारी के बाद इसके प्रमाण की

को उम्मीद है कि ये जल्द ही इस दिला निरापदीत तंत्रजनन का हो गे भी कामयाब होगा।
अंतर्राष्ट्रीय मंथना ने दी घोषणा संक्षेप : प्रोफेसर श्री.आर. काम्पोज

को मान्यता, प्रधार्य के वैज्ञानिक हृष्टप्रबन्धकर्ता
पीढ़ी में नई भौमिका को मान्यता देने वाली अमेरिकन फार्मटेप्लोनीविकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) ने एस.ए. ड्राय प्रमाणित प्रतीक्षित जर्नल चार्टर डिजीज में वैज्ञानिकों को इस नई भौमिका को रिपोर्ट को प्रथम शीधे रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर भाग्यकारी थी। अमेरिकनफार्मटेप्लोनीविकल सोसाइटी पीढ़ी की वैज्ञानिकों के अध्ययन के रिपोर्ट विविधाता के बुलापत्र द्वारा भौमिका को वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए लघाउ दी। प्रो. काम्पोज ने जल्द विविधाता कृषि परिवर्तन में विविध फलस्तीनों तथा खेतों को खम्ब पर प्रत्येक महावर्षण ही नई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से भौमिका के आगे प्रमाण पर कही नियन्त्रणी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा दोग विविध पर जल्द काम तूक करना चाहिए। उस अवसर पर औरंगाबादी द्वारा उन्नत वैज्ञानिक



कृषि यांत्रिकशालय के अधिकारी ने समेकी चौका व मीठिया एकात्मक गुरु महान् ज्ञानी भी मीठाह में।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम
प्रोग्राम

दिल्लीडॉ दिग्गज और नवजाता
अनुमति प्राप्त विदेशी ई. डी. जी. ने यह समझा है कि बहुमत कि गणना भारत चुनोंका-2019 में जनरल में एवं राज की चीजोंकी दिल्लीडॉ देने पर विजयको न लापता में काम किया। भारत सभा की नेतृत्व के बाद विजयको ने इस चाहीं को खोया किया है। अधिकार विधय में उपर्युक्त के मुख्यालय दिया, ऐसका प्रबन्धक प्रबन्धकाल में यह चाहीं देखने चो चिन्ता है। अद्यतन ऐसे विधायक के विषयक या अन्य विषयों सहायता ने कहा कि चाहीं की बहुत प्रश्नोंमें गोबर्जनादृष्टि विधायी के बाहर लोभात्मा और विद्युतिवालय के प्राप्त ऐसीविधायक द्वारा विनियोग कुम्हर परिवर्तन के काह कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समझौते अपरिवर्तन वालटोरीवैज्ञानिक नोट्सइटी, पूर्वाए़ प्राप्त विदेशी 2022 के दीर्घन 'कनेक्शन्स नीटीक एक्टिव हिन्दी नीफ योर्क्स' पर उपर्युक्त को स्वीकार किया गया है। अंतिमा कृषि विद्युतिवालय के वैज्ञानिक दृष्टिया में इस वीमानी के साथमें यात्रा लोभात्मा मध्ये गए हैं। ई. विधायक ने कहा कि वह वीमानी का बाक है। यह तीन परिवर्ती पर जुलै से लेकर लंबी समय-भूरे रोग की चाहीं के स्थ में इकट्ठ होता है। समय के साथ, इन परिवर्ती की संखा में वृद्ध होती है जो बाद में नैतिक शेष में वर्तिवित हो जाते हैं। वर्षायु के वैश्वनिकी तथा बनवाती परामर्श, तो पूरा योग्यान, तो चम्पी कुमारी, तो यकरण नाम लामे, तो परिवर्त लोभात्मा, तो दलविदर यात्रा विद्या, तो साधारण आर्द्ध और तो विवरत अल्लाहत ने भी इस लोभात्मा ये लोगान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एसटी पत्र १५२१ पैस	17.01.2023	-----	-----

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी और इसके कारक

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरिकोला की खोज की है। वैधिक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द अनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्वीकृत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता: पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जनरल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जनरल में स्थीकार कर मान्यता दी है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिक हैं। इन



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ज्वार की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जनरल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। डॉ. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खोरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों

ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेन्द्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एच.एस. सहारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान: इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के

वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपात्मक, जैव रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साखित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबसिएला वैरिकोला इस बीमारी का कारक है। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनजीत घण्टस, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पर्मी कुमारी, डॉ. अजरंग लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलचिंद्र पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अहलावत ने शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम ई-पत्र	17.01.2023	-----	-----

एवएपू वैज्ञानिकों ने पहलो बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

अमेरिकन फाइटोप्थेलोजिकल सोसाइटी ने दी बीगाई को मान्यता

उत्तम हिन्दू न्यूज नेटवर्क
हिसार/मुख्यमन्दर कौर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी के इसके कारक जीवाणु ब्लेब्सिएला वैरीकोला की खोज की है। वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार प्रस्तुत में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कूलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज के निदेशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द में जल्द आनुवाणिक स्तर पर प्रतिरोध स्त्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाच होंगे।

अंतरराष्ट्रीय संस्था ने दी बीमारी को मान्यता, एचएपू के वैज्ञानिक हैं यहां स्नाथकर्ता

पैथो में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन



कूलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज नई बीमारी का उत्तम प्रतिरोध करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

फाइटोप्थेलोजिकल सोसाइटी (ए.पी.एम.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिक्रिया जनल एलांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्राथम फोर रिपोर्ट के रूप में जनल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोप्थेलोजिकल सोसाइटी (ए.पी.एम.) पैथो की बीमारियों के अध्ययन के लिए सभसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समूहों में से एक है जो विशेषतर कैर्डियो बीमारियों पर विभास्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दासिया

में इस बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में ब्लेब्सिएला वैरीकोला बीमारी पर शोध रिपोर्ट दी जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर ने मान्यता प्रदान करते जनल में प्रकाशन के स्वीकार किया है। विश्वविद्यालय के कूलपति डॉ. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इन के लिए बधाई दी। प्रो. ने कहा कि बदलते कृषि व विभिन्न फसलों में से को समय पर पहचान हो गई है। उन्होंने



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरेखन	18-01-23	9	28

एथएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

हरिलूणि ल्यूज में हिस्ट

ਅਮੇਰਿਕਨ ਫਾਈਟੋਪੈਥੋਲੋਜਿਕਲ ਸੋਸਾਇਟੀ ਨੇ ਦੀ ਬੀਮਾਰੀ ਕੋ ਮਾਨਯਤਾ

द्वारा दस लाखों
मुख संग्रहालय परिषद के दैवितियों
की मतली घटना हो गई।
अमेरिका, तो पहली बार, दूसरी बार
एक साथ, दूसरी परिषद नामका, दूसरी
दृष्टिपोषण किए गए। अमेरिका अपने
जैव और जलवायी अधिकारात तो ही इस
सेवायत्ता में दैवितय दिया।



हीरायाणा कृषि विभागीयालय के वैज्ञानिकों ने ज्वर की नई बीमारी व इसके कारण जीवाणु बल्टेसिसएला बीमारी काला की खांख की है। वैज्ञानिक स्तर पर पहली बार इसका फरसत में इस्तमह की बीमारी का भाट चला है। पीछे में नई बीमारी का नामान्तर देने वाली अधिकारक पारिदृश्य प्रयोगलिङ्गिकला सोसाइटी (ए.पी.एस.) यु.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिक्रिया जनल पर्सन डिजिज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम रोशन रिपोर्ट के रूप में जनल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अधिकारक प्रयोगलिङ्गिकला सोसाइटी (ए.पी.एस.) पीछे की बीमारियों के अध्ययन के लिए सभी संपर्कों अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विश्वासी पीछों की विधायियों पर विश्वासीरीय प्रक्रमान्तर करती है। हीरायाणा कृषि विभागीयालय के

वर्ष 2018 ले दिसाई ट्रिए ये लक्षण

अनंतधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने यहाँ किए

पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की

ਵਿਸਾਨੀ ਰਾਜਿਕਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਲੇਖ

परिवार कुरुक्षेत्र द्वा० यह जागतिक वे दैवानियों की शारीर को सुख
मन को उत्तम करने वाली प्रसाद्युषण में विशेषज्ञ परामर्श देते थे। अतिरिक्त वैदिकों को
उनमें प्राप्त एकलाभ महाविद्याका नाम था। उत्तम दैवानियों से ब्रह्मानि के
अन्तर्गत एक दैवी विद्यायांशु द्वारा कुरु काश का दैवानियों को रोग
विद्यायांशु पर जड़ा और उसका असुख काश का दैवानियों का इस दैवी पर
आवेदन हो गया। अनुष्ठान विद्यायांशु के अविद्यानि को उत्तम दृष्टि पर
पापानुभव व अतीती एकदम ज्ञान द्वारा अवश्य नीचे लौट दिया गया।

बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की महंगत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में गश्ये वैज्ञानिकों द्वारा दिशा, रोकथक व महेंद्रगढ़ में यह बीमारी की जांच की गई है। इसके बाद उन्होंने एक अलग वैज्ञानिक द्वारा

एवं प्रस. समाजरण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योग्यनावद ग्रन्तिन कालिकम विकासित करने में महत्व मिलेगा। युवक शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्राणी वैज्ञानिक टीम विनोद दुमुक मरिलन के कानूनी फैसले पर आधारित है। अतः इनका संबोधन अपेक्षित कर दिया जाएगा।

2022 के दौरान कलेजियल लोक स्ट्रीम डिजिजन ऑफ सेर्विस एवं सोशल रिपोर्ट को स्वीकृत किया गया है। लोकवि के वैज्ञानिक दुरुप्या में इस बीमारी के सम्बन्ध में प्राणी शोधकर्ता मनो गए हैं। केवल लोकवि, जैव रासायनिक, आणविक व रोगानकता परीक्षणों के आधार पर हम यह सामिक्षिक करने में कामयाब रहे हैं। एक जीवान्तर्भूत वैज्ञानिक वैकल्पिक इल्ल बीमारी का कारक है। हम योग पत्तियों पर लोटी से लोकवि लाल-भूंई रंग की घासियों में प्रकृत झोटी है। समय के साथ, इन घासियों की संख्या में कुदरी होती है।